मछन्दर फ़ौलादी की निराली मूँछें और दूसरी कहानियाँ

मुसन्निफ़:

मुशर्रफ़ अली फ़ारूक़ी

अन्ग्रेज़ी से तरजुमा:

ज़ीनत हेसाम

बन्दर धन्दा

तो, लो, सुनो कि जिसके सर के बीचों–बीच एक सुनहरा बाल था. एक दिन वह नाई के पास गया और उस से कहा, “मेरे बाल काट दो, नान खताई स्टाइल में”.

“मगर भाई, नान खताई स्टाइल में बाल काटने से तो तुम्हारा सुनहरा बाल भी कट जायेगा!” नाई ने कहा.

“तो मेरी बला से और तुम्हारी बला से और दुनिया की बला से! कटता है तो कट जाए यह सुनहरा बाल!” बन्दर बोला.

“अच्छा तुम ही जानो!” नाई ने कहा. फिर उसने अपनी मशीन उठाई और बन्दर के बाल नान खताई स्टाइल में काट डाले. ज़ाहिर है, सुनहरा बाल सबसे पहले मशीन की ज़द में आया.

“हाय हाय, यह तो बड़ा बुरा हुआ”. यह कहते हुए बन्दर साहब ने नाई की मशीन जेब में डाली और अपना हेट सर पर जमा कर चलने को हुए.

“अरे! यह क्या कर रहा है?” नाई ने चिल्ला कर कहा.

“सुनो मियाँ नाई!” बन्दर ने जवाब दिया, “तुमने मेरा सुनहरा बाल रखा और मैंने तुम्हारी मशीन. अब जो सूझे सो जानो!” यह कहकर बन्दर साहब मशीन के साथ यह जा वह जा हुए और नाई बेचारा अपना सर खुजाता रह गया. उसे कुछ भी न सूझा.

कुछ दूर चलने के बाद बन्दर को एक माली नज़र आया जो अपनी कैंची से एक बाढ़ तराश रहा था.

“कैंची से बाढ़ काटना पुराने ज़माने की बात हुई!” बन्दर ने बाढ़ के उपर से झांकते हुए कहा. “कुछ लोग हैं जो वक़्त के साथ नहीं चलते!”

“क्या कह रहे हो भाई?” माली ने पूछा.

“यह देखो, मेरे पास कितनी नफ़ीस मशीन है.” बन्दर ने कहा. “ज़रा इससे बाढ़ तराश कर तो देखो.”

“लेकिन इतनी नाज़ुक मशीन बाढ़ काटने से खराब न हो जायेगी?” माली ने तअज्जुब से पूछा.

“तो मेरी बला से और तुम्हारी बला से और दुनिया की बला से! अगर खराब होती है तो हुआ करे!” बन्दर बोला.

“अच्छा अगर यह बात है तो मैं इसे इस्तेमाल कर के देखता हूँ” माली ने कहा और मशीन से बाढ़ की कांट–छांट करने लगा. देखते ही देखते नाई की मशीन का सत्यानास हो गया.

“हाय हाय, यह तो बड़ा बुरा हुआ”. बन्दर बोला, और सामने रखी हुई माली की रेढ़ी को धकेल कर ले जाने लगा.

“अरे, यह क्या कर रहा है” माली चीखा, “रुक, मेरी रेढ़ी कहाँ लिए जा रहा है?”

“सुनो मियाँ माली”, बन्दर ने जवाब दिया, “नाई ने मेरा सुनहरा बाल रखा और मैं ने उसकी मशीन. तुमने मेरी मशीन और मैं ने तुम्हारी रेढ़ी. अब जो सूझे सो जानो!” और यह कह कर बन्दर साहब तेज़ी से रेढ़ी समेत आगे बढ़ गए और माली सोचता ही रह गया. उसे कुछ नहीं सूझा.

रेढ़ी को धकेलता हुआ बन्दर आगे बढ़ा तो उसे एक मोटी खातून शकर का बड़ा सा थैला उठाए जाती नज़र आईं.

“अरे, जब एक ठेला खाली जा रहा हो तो भला आपको यह वज़न उठाने की क्या ज़रूरत है?” बन्दर ने कहा, “यह थैली इस पर रख दें.”

“बड़ी मेहरबानी तुम्हारी भाई!” मोटी खातून ने कहा और शकर का थैला रेढ़ी पर रख दिया.

“इस गाड़ी में अब भी जगह है. आप भी चढ़ जाएं.” बन्दर बोला.

“नहीं नहीं, अब मैं कहाँ चढ़ुंगी! मेरे तो वज़न से ही गड़ी टूट जाएगी!” मोटी खातून बोलीं.

“तो मेरी बला से और तुम्हारी बला से और दुनिया की बला से! अगर रेढ़ी टूटती है तो टूट जाए!” बन्दर बोला.

“हाय, तुम कितने प्यारे हो!” यह कह कर वह खातून रेढ़ी पर चढ़ गईं और वही हुआ जो होना था! यानी रेढ़ी टुकड़े टुकड़े हो गई और खातून धड़ाम से ज़मीन पर गिर पडीं.

“हाय हाय, यह तो बड़ा बुरा हुआ”. यह कहते हुए बन्दर ने चीनी की बोरी बग़ल में दबाई और चल दिया.

“अरे, यह मेरी शकर कहाँ लिए जा रहा है?” औरत चिल्लाई.

“सुनो मियाँ मोटी बी!”, बन्दर बोला. “नाई ने मेरा सुनहरा बाल रखा और मैं ने उसकी मशीन. माली ने मेरी मशीन रखी और मैं ने उसकी रेढ़ी. मेरी रेढ़ी तुम्हारी हुई और तुम्हारी शकर मेरी. अब जो सूझे सो जानो!” यह कहता हुआ बन्दर आगे बढ़ गया और मोटी खातून को हकका–बकका छोड़ गया. उन्हें कुछ नहीं सूझा.

आगे रास्ते में एक बेकरी थी. बन्दर अन्दर घुस गया और चीज़ों पर नज़र डाली. वहाँ केक थे, बन थे, डबल रोटियाँ थीं, लेकिन पेस्टरी कोई न थी.

“तुम ने पेस्टरियाँ कहाँ छुपा कर रखी हैं?” बन्दर ने ज़ोर से काउन्टर पर मुकका मार कर कहा.

“मैं अज पेस्टरियाँ नहीं बना सका” बेकरी वाले ने जवाब दिया, “क्युंकि मेरे पास शकर खत्म हो गई थी.”

“शकर साथ छोड़ गई, लेकिन अभी क़िस्मत ने तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा है.” बन्दर बोला, “यह देखो, मैं क्या लाया हूँ!”

“लेकिन अगर मैं ने तुम्हारी शकर इस्तेमाल कर ली तो तुम्हारे पास कुछ न बचेगा!” बेकरी वाले ने कहा.

“तो मेरी बला से और तुम्हारी बला से और दुनिया की बला से! अगर नहीं बचती तो न बचे!” बन्दर बोला.

“काश दुनिया में आप जैसे अज़ीम और दर्दमन्द लोग और भी होते!” बेकरी वाले ने कहा और बन्दर से शकर की बोरी ले कर ट्रे भर पेस्टरियाँ तय्यार कर लीं.

“यह हुई न बात!” बन्दर चीखा. उसने झपट कर पेस्टरियों की ट्रे उठाई और दरवाज़े की तरफ़ लप्का.

“अरे, यह मेरी पेस्टरियाँ कहाँ लिए जा रहा है?” बेकरी वाला चिल्लाया.

“सुनो मियाँ बेकरी वाले!”, बन्दर ने जवाब दिया. “नाई ने मेरा सुनहरा बाल रखा और मैं ने उसकी मशीन. माली ने मेरी मशीन रखी और मैं ने उसकी रेढ़ी. मेरी रेढ़ी मोटी खातून ने ली और उसकी शकर मैं ने. तुम ने मेरी शकर ली और मैं ने तुम्हारी पेस्टरियाँ. अब जो सूझे सो जानो!” यह कह कर बन्दर साहब पेस्टरियाँ ले कर चलते बने और बेकरी वाला खड़ा सर खुजाता रह गया. बाक़ी लोगों की तरह उसे भी कुछ न सूझा.

पेस्टरियों की ट्रे उठाए बन्दर एक बाग़ से गुज़रा. वहाँ एक शादी की दावत में लोग जमा थे. बन्दर ने सीधा उनका रुख किया. क़रीब पहुंच कर बन्दर इधर उधर देख कर बोला. “यह कैसी शादी है जिस में केक ही नहीं?”

“बात यह है कि शादी का केक खत्म हो चुका है.” मेहमानों ने जवाब दिया.

“फिर तो मैं बिल्कुल सही वक़्त पर पहुंचा हूं!” बन्दर ने कहा. “यह पेस्टरियाँ मेहमानों को पेश करें. शादी में लोग खाली मुंह बैठे हों, यह मुझ से नहीं देखा जात!”

“यह तो आप की बड़ी मेहरबानी होगी, जनाब”, दुल्हा ने कहा, “लेकिन फिर आपके लिए पेस्टरियाँ न बचेंगी!”

“तो मेरी बला से और तुम्हारी बला से और दुनिया की बला से! अगर नहीं बचतीं तो न बचें!” बन्दर बोला.

“क्या बात है आप की! कितने फ़राख–दिल हैं आप!” दुल्हा ने कहा, “मैं आप के इसरार पर यह लिए लेता हूँ.”

मेहमानों को पेस्टरियाँ पेश की गईं जो उन्होंने मिनटों में चट कर डालीं.

“हाय हाय, यह तो बड़ा बुरा हुआ. बहुत ही बुरा हुआ.” बन्दर बोला और दुल्हन को कन्धे पर उठा कर चलने को तय्यार हुआ.

“ओ बन्दर!” दुल्हा चिल्लाया, “यह मेरी दुल्हन ले कर कहाँ जा रहा है?”

“सुनो मियां दुल्हा!” बन्दर ने जवाब दिया, “नाई ने मेरा सुनहरा बाल रखा और मैं ने उसकी मशीन. माली ने मेरी मशीन रखी और मैं ने उसकी रेढ़ी. मेरी रेढ़ी मोटी खातून ने ली और उसकी शकर मैं ने. बेकरी वाले ने मेरी शकर ली और मैं ने उसकी पेस्टरियाँ. तुम ने मेरी पेस्टरियाँ खाईं और तुम्हारी दुल्हन मैं लिए जा रहा हूँ. अब जो सूझे सो जानो!” यह कह कर बन्दर ने दुल्हन को उठाए तेज़ तेज़ चलना शुरू कर दिया.

अचानक उसके सर पर से एक जूता उड़ता हुआ गुज़रा.

“यह अच्छे शगून के लिए है”, बन्दर ने दुल्हन से कहा. मगर फ़ौरन ही एक और जूता उड़ता हुआ आया और ज़ोर से उसकी पीठ पर लगा. “आउछ”, बन्दर चिल्लाया. उसने देखा कि दुल्हा उस पर जूते फेंक रहा था. उसके पैरों में सिर्फ़ मोज़े रह गए थे.

“मैं उस बदमाश को मज़ा चखा दुंगा!” दुल्हा चीखता हुआ बन्दर की तरफ़ दौड़ा.

“जाने न पाए यह बदमाश बन्दर!” कोई चीखा और तमाम लोग बन्दर के पीछे दौड़ पड़े.

जब बन्दर ने देखा कि तमाम मजमा उसका पीछा कर रहा है तो उसने जल्दी से सोचा कि उसे क्या करना चाहिए. फिर बन्दर ने दुल्हन को, जो अपने हाथ पाँव चला रही थी, कांधे से उतारा और अपनी जान बचा कर भाग निकला.

बन्दर की पुश्त पर चारों तरफ़ से जूते बरस रहे थे और वह बड़ी मुश्किल से घर पहुँच पाया.

“आज मैं ने खूब सबक़ सीखा!” बन्दर आईने में अपना हेअर कट देखते हुए बोला. “और वह यह कि सिर्फ़ ऐसे लोगों के साथ धन्दा करो जो खूब सूझते और खूब जानते हों!”

(नोट: यह कहानी उरदू ज़बान की एक लोक कहानी से माखूज़ है. असल कहानी में बन्दर साहब की खूब पिटाई होती है और वह अपना “धन्दा” करने से तौबा कर लेते हैं. बन्दरों को अच्छी तरह जानने की वजह से मुझे पता है कि बन्दर कभी अपने “धन्दे” बन्द नहीं करते, और उनकी “तौबा” तो बिल्कुल ही पककी नहीं होती. इस वजह से मैं ने इस कहानी में जहाँ और छोटी मोटी तब्दीलियाँ कीं वहां उसके अन्जाम को भी हक़ीक़त से क़रीब तर कर दिया. उम्मीद है आप ज़्यादा बुरा नहीं मनाएंगे. मुशर्रफ़ अली फ़ारूक़ी)

मेडम दुंबा जानी

मेडम दुंबा जानी आम भेड़ों की तरह न थीं. उनमें कोई चीज़ थी जो दूसरों में न कभी देखी न सुनी गई थी. मेडम नई नई क़स्बे में वारिद हुई थीं और कुछ ज़्यादा ही मोटी, डील डोल में बड़ी और बहुत अजीब व ग़रीब थीं. न तो कोई और भेड़ उनकी तरह से मुंह से राल टपकाती और मुंह से ग़रग़राहट की आवाज़ें निकालती थी, और न ही किसी और भेड़ को आज तक उनके जैसे बड़े बड़े दस्ताने और खटर पटर करने वाले जूते पहने देखा था. हां, अलबत्ता मैमना सयाना, जो हर वक़्त मेडम की नक़ल में लगा रहता था, ज़रूर यह सारी हरकतें किया करता था.

और मैमनों की तरह मैमने सयाने को भी डर लगा रहता था कि कहीं मेडम दुंबा जानी से मुलाक़ात न हो जाए. उसे बिल्कुल अच्छा न लगता था जब मेडम उसको प्यार करतीं और उनके सख्त और खुर्दुरे बाल सयाले के नर्म गालों में चुभ्ते. लेकिन यह बात तमाम वालिदैन को बड़ी अच्छी लगती थी कि वह उनके मैमनों को इतना प्यार करती हैं. दिन में कम अज़ कम एक बार मैमने सयाने को मेडम कहीं न कहीं, किसी न किसी मोड़ पर ज़रूर मिलतीं. यूँ लगता कि वह हर जगह मौजूद रहती थीं.

लेकिन उन दिनों मैमना सयाना मेडम को भूल भाल चुका था.

तमाम मैमने मुक़ाबले के इम्तिहान की तय्यारियों में मसरूफ़ थे. सयाने ने भी खुद को घर में बन्द कर रखा था ताकि वह हर वक़्त और ज़्यादा से ज़्यादा खा सके. मुक़ाबले में उस मैमने को अव्वल आना था जो सब से ज़्यादा मोटे ताज़े निकले.

सयाने के वहम व गुमान में भी यह बात न आई थी कि मेडम दुंबा जानी को इम्तिहान लेने के लिए चुना जाएगा. मगर जज उन्हें ही बनाया गया था क्यूँकि नन्हे मुन्ने मैमनों में उनकी खुसूसी दिलचस्पी को सब अच्छी तरह जानते थे.

थोड़ी देर में इम्तिहान शुरू हुआ और मेडम ने मैमनों को एक एक कर के तौलना शुरू किया. आम तौर पर जज मुक़र्ररा वज़न में एक दो छटांक की कमी को नज़र–अन्दाज़

कर देते थे, और मैमने को पास होने वाले नंबर मिल जाते थे. लेकिन मेडम दुंबा जानी ने ऐसे कोई रिआयत न बर्ती. मैमने सयाने का वज़न मुक़र्ररा वज़न से सिर्फ़ आधा छटांक कम होने पर उन्होंने उसको फ़ौरन फ़ेल कर दिया. सयाने को दूसरे दुबले पतले मैमनों के साथ क्लास रूम के एक कोने में खड़ा होना पड़ा. मोटे मैमनों ने उन पर खूब सीटियां बजाईं और फ़िक़रे कसे. जो मैमना अव्वल आया, मेडम ने उसे बहुत बहुत प्यार किया. यह देख कर सयाने पहली मर्तबा शुक्र अदा किया कि वह अव्वल न आया!

घर लौटते हुए सयाने के अम्मा अब्बा ने उसे समझाया कि अगर मेडम ने उसके साथ सख्ती की तो उसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि वह उसकी बेहतरी चाहती हैं. उन्होंने उसको कम नंबर यूँ दिए ताकि वह खा पी कर खुद को मोटा कर सके. अगर सयाना उसी रोज़ से खाने पर लग जाए तो कोई वजह नहीं कि वह अपना वज़न न बढ़ा सके. सप्लीमेंटरी इम्तिहान की तारीख क़रीब ही थी. यह बात बिल–आखिर मैमने सयाने की समझ में आ गई. उसने अपने आँसू पोंछे और अहद किया कि वह उस दिन से दूगना खाना खाएगा. सयाने की बात सुन कर उसके वालिदैन बहुत खुश हुए. उन्होंने रास्ते में एक दुकान पर ठहर कर बहुत सारा राशन खरीदा और घर पहुँचते ही मैमना सयाना खाने पर पिल पड़ा.

चन्द दिनों बाद एक अजीब वाक़िया पेश आया. वह मैमना जो क्लास में अव्वल आया था, पुर–असरार तौर पर अपने कमरे से ग़ायब हो गया. क़स्बे के लोगों ने उसे बहुत तलाश किया. मेडम दुंबा जानी ने तो एक एक कोना खोज डाला लेकिन मैमने का कुछ पता न चला. हर एक हैरान था कि आखिर वह गया कहाँ?

इस वाक़िए को अभी दो ही दिन गुज़रे थे कि अगली रात को एक और मोटा ताज़ा मैमना ग़ायब हो गया. उसका भी कोई नाम व निशान न मिला. अब तो सारे वलिदैन अपने अपने मैमनों के लिए बड़े ही परेशान हुए. मेडम ने उन्हें मश्वरा दिया कि वह मैमनों को रात के वक़्त उनके कमरों में बन्द कर दिया करें. उनकी यह तदबीर सब को बहुत पसन्द आई.

मगर कौन जानता था कि अगले रोज़ एक और मैमना ग़ायब हो जाएगा, और वह भी बन्द कमरे से! और यह तो सब से खुबसूरत, और सब से ज़्यादा दूधिया और नर्म नर्म बालों वाला मैमना था. एक लम्हा वह मज़े से अपने गदीले बिस्तर पर सो रहा था और दूसरे लम्हे वह वहां से ग़ायब था! किसी को इस बात का कुछ सर पैर समझ में न आया. मगर सब बेहद डर गए. वह रात सब ने गुमशुदा मैमनों के लिए दुआएं करने में जाग कर काटी. मेडम दुंबा जानी जो वहां सब से पहले पहुँची थी, ब–आवाज़े बुलन्द दुआएं पढ़ती रही.

जब भी मैमना सयाना किसी मैमने के ग़ायब होने की खबर सुनता तो खुद से कहता "चलो, मुक़ाबले से एक और कम हुआ!" और इस से ज़्यादा कुछ न सोचता. इम्तिहान की तय्यारी ने उसे मसरूफ़ियत में घेर रखा था. उसने अपनी मेज़ कुर्सी बावर्चीखाने में रख ली थी और रात के खाने के बाद वह देर तक बैठा फ्रिज खोल खोल कर देखता रहता कि आया कुछ खाने के लिए उसका दिल ललचाता है कि नहीं, और अगर दिल न भी चाह रहा हो, वह तब भी कुछ न कुछ फ्रिज से निकाल कर मुंह में डाल ही लेता! उसका वज़न ज़बर्दस्त तरीक़े से बढ़ रहा था.

उन तमाम दिनों में वह एक दफ़ा भी घर से न निकला था. लेकिन एक दिन जब उसने देखा कि उसका पसन्दीदा झड़बैरी का केक खत्म हो रहा है तो वह हवास बाख्ता हो कर बेकरी की तरफ़ भागा. रास्ते में उसने लोगों को आपस में कहते सुना: "ज़रा देखो तो भई, आखिर यह कौन मैमना है? इतना मोटू और तय्यार?"

किसी ने भी उसको न पहचाना था. मैमने सयाने का सीना फ़ख्र से फूल गया. वह मस्ती में झूमता हुआ चलने लगा और बेकरी के बाहर किसी से टकरा गया. यह मेडम दुंबा जानी थीं जो गुमशुदा मैमनों के इश्तेहारी पोस्टर लगाती फिर रही थीं.

"नए आए हो क्या?" मेडम ने उस से पूछा. उनके मुंह से अजीब सी ग़रग़राहट की आवाज़ आ रही थी. मैमने सयाने को बड़ा फ़ख्र महसूस हुआ कि मेडम तक उसको न पहचान सकी थीं.

“मैं मैमना सयाना हूँ, मेडम!” उसने इठलाते हुए कहा. “आपको याद है आप ने मुझे इम्तिहान में फ़ेल कर दिया था क्यूँकि मेरा वज़न थोड़ा कम निकला था? अब आप ज़रा मुझे देखें!”

मेडम हैरतज़दा हो कर सयाने को तकती रह गईं. उनके मुंह से कुछ न निकला.

मैमना सयाना उछलता कूदता वहां से निकल लिया. वह खुशी में तमाम दिन खाता और जुगाली करता रहा, और उसे रात में नींद तक न आई. वह आईने के सामने खड़ा हो कर अपने ऊपर इतरा रहा था कि अचानक उसे महसूस हुआ कि एक अनदेखा शिकन्जा उसकी कमर के गिर्द लिपट गया है.

इस से पेश्तर कि वह जान सके कि उसके साथ क्या हो रहा है, वह फ़टाक से उड़ कर अपनी खिड़की के बाहर पहुँचा, और फिर घरों और गलियों के ऊपर से उड़ता हुआ चला. और पलक झपकते में उसने खुद को मेडम दुंबा जानी के पन्जों में पाया. दस्तानों और जूतों के बगैर मेडम पूरी खूनी डायन लग रही थीं.

“यह ज़रूर एक भयानक ख्वाब है!” मैमने सयाने ने सोचा, और खौफ़ के मारे आँखें बन्द कर लीं. लेकिन उसी लम्हे एक नोकीली सी चीज़ उसके चेहरे से टकराई और तेज़ दांतों ने उसके गालों को काटा.

“आउछ!” सयाना तक्लीफ़ से चिल्लाया. वह ख्वाब नहीं देख रहा था. मेडम दुंबा जानी तो वाक़ई में एक बहुत ही ज़बर्दस्त क़िस्म की डायन थीं!

“प्यारे मैमने सयाने! तुम तो कितने रस रसीले, कितने मज़ेदार हो!” वह बोलीं.

“यह डायन मुझे खा जाएगी”, मैमने के ज़हन में सब से पहला खयाल आया. और फिर उसने सोचा कि अगर वह डायब का निवाला बन गया तो फिर झड़बैरी का केक तो वह कभी भी न खा सकेगा! यह खयाल पहले खयाल से कहीं ज़्यादा तक्लीफ़ देह था.

उधर डायन अपनी तय्यारी में मशग़ूल थी और चूल्हा जला चुकी थी.

यहां से फ़रार होने के लिए मुझे यह पता करना ज़रूरी है कि मैं यहां पहुँचा कैसे? मैमने ने सोचा और उस अजीब व ग़रीब मशीन की तरफ़ देखा तो खिड़की के क़रीब रखी हुई थी और एक दूरबीन की तरह मालूम हो रही थी. अभी सयाने को यह खयाल आया ही था कि शायद उसके वहां पहुँचाने में उस मशीन का कोई हाथ हो कि उसे अपनी गर्दन पर किसी की गर्म सांस महसूस हुई.

“वाह भई! यह गोल मटोल मैमना तो फ़रार की सोच रहा है!” मेडम बोलीं. वह खामोशी से उसके पीछे आ खड़ी हुई थीं.

सयाने का दिल तेज़ी से धड़क रहा था मगर उसने बहादुरी से जवाब दिया, “जी नहीं मेडम, मैं तो आपकी मैमने पकड़ने की उमदा तर्कीब को सराह रहा था!”

डायन ने खुशी से दांत निकाले. उसे अपनी तारीफ़ें सुनने क बड़ा शौक़ था. “ओह तो तुम मेरी पकड़–धकड़–बीन की बात कर रहे हो! मेरी पकड़–धकड़–बीन जो मैमना–लिपट और दुंबा–झपट है!” उसने मशीन को इतरा कर सहलाया चूँकि उसे अपनी ईजाद पर बहुत फ़ख्र था.

अब मुझे यह पता करना चाहिए कि यह पकड़–धकड़–बीन कैसे काम करती है, सयाने ने सोचा.

“यह तो मुझे दूरबीन की तरह लग रही है”, वह बोला.

“क्या बक रहा है! अरे मेरी यह पकड़–धकड़–बीन तो दूरबीन से सौ हज़ार गुना बेहतर काम करती है. इस से न सिर्फ़ दूर दराज़ की चीज़ें देख सकते हैं बल्कि उन्हें अपने पास उठा भी ला सकते हैं. और जिस तरह किसी को देखनेवाली आँख नज़र नहीं आती, उसी तरह कोई पकड़ने वाले हाथ को भी नहीं देख सकता!”

अब मैमने सयाने को पता चला कि मेडम किस तरह मैमनों को ग़ायब किया करती थीं. यह पकड़–धकड़–बीन तो वाक़ई बड़ी ज़बर्दस्त चीज़ थी. उसे तो यह बहुत ही पसन्द आई. लेकिन बस वह उसके ज़रिए फ़रार नहीं हो सकता था.

मेडम अपने बड़े बड़े दांत निकाल कर एक बहुत ही भयानक अन्दाज़ में मुस्कुराईं और फिर पलट कर इत्मीनान से मसाला तय्यार करने लगीं. वह गा रही थीं:

हाय मैमना! वाय मैमना! देखो किधार गया मैमना!
एक बना है चांप मैमना! एक अचार गोश्त मैमना!

चटपटा और भुना मैमना! खूब मसालेदार मैमना!

हाय मैमना! वाय मैमना! देखो हज़्म हो गया मैमना!

अचानक मैमने सयाने को एक खयाल सा आया.

क्या यह मुम्किन हो सकता है? उसने सोचा.

सयाने ने पकड़–धकड़–बीन को घुमा कर उसके उलटे सिरे से झांका. उलटी तरफ़ से देखने पर मेडम एक छछुन्दर के साइज़ कि नज़र आ रही थीं.

“हाय!” अचानक डायन ने एक चीख मारी. उसकी समझ में न आया कि क्या हो रहा है.

पकड़–धकड़–बीन वाक़ई दूरबीन से कहीं बेहतर काम करती थी! जैसा कि सयाने ने सोचा था, उलटे सिरे से देखने पर न सिर्फ़ डायन छछुन्दर के साइज़ की नज़र आ रही थी, बल्कि उसे पकड़–धकड़–बीन से पकड़ कर उठाने में उसका वज़न भी छछुन्दर के बराबर महसूस हो रहा था. सयाने ने उसे बड़ी आसानी से उठा लिया था और उसी तरीक़े से उसने बड़े से फ़्रीज़र को भी ब–आसानी खोल लिया. एक लम्हे मेडम हवा में अपनी दुम के बल लटक रही थीं, और दूसरे लम्हे वह फ़्रीज़र के अन्दर ठूंसी जा चुकी थीं और उसका दर्वाज़ा बन्द हो चुका था. मैमने सयाने ने खट से चाबी घुमा कर फ़्रीज़र को लाक भी कर दिया.

बाद में इस खबर से बड़ी सन्सनी फैली कि मेडम दुंबा जानी असल में तो एक डायन थीं. सब को मैमने सयाने पर बड़ा रश्क आया जब उसने तमाम क़िस्सा सुनाया कि

किस तरह उसने तने तन्हा डायन का मुक़ाबला किया और उसको फ़्रीज़र के अन्दर बन्द किया. और वाक़ई, जब फ़्रीज़र खोला गया तो अन्दर मेडम एक बर्फ़ की सिल की तरह जमी हुई पाई गईं. मगर मैमने सयाने को अभी मज़ीद शोहरत मिलनी बाक़ी थी. जब वह तमाम स्कूल में अव्वल आया और "शाही मैमना" के लक़ब से नवाज़ा गया तो उसकी और भी वाह–वाह हुई.

मेडम दुंबा जानी किस तरह मैमनों को पकड़ती थीं, यह राज़ अलबत्ता कभी किसी और को पता न चल सका. मैमने सयाने ने यह बयान दिया कि चूँकि उसे सोते में इग़वा किया गया था इसलिए उसे कुछ नहीं मालूम हो सका कि वह किस तरह मेडम के शिकन्जे में फंसा. मेडम के अपार्टमेंट से भी कोई ऐसी चीज़ न मिल पाई जिस से उस राज़ से पर्दा उठाने में मदद मिलती. लेकिन यह ज़रूर था कि उसके बाद कभी कोई मैमना गुम न हुआ. गो बेशक खाने पीने की चीज़ें अक्सर, और झड़बैरी के केक खास तौर पर, मेज़ों पर से ग़ायब होती रहीं, लेकिन सबका कहना यही था कि खाने की चीज़ों का ग़ायब होना मैमनों के ग़ायब होने से कहीं बेहतर है.

मछन्दर फ़ौलादी की निराली मूँछें

मछन्दर फ़ौलादी इतना ताक़तवर था कि वह अपनी मूँछों से भारी भारी वज़न उठा सकता और गाड़ियां खींच सकता था. कभी वह अपनी मूँछें सर्कस की छत के दोनों सिरों पर बांध कर नटों की तरह झूलता था. कभी वह अपनी मूँछों के सिरे दो खम्बों से बांध कर हवा में लटक जाता, और सर्कस के मस्खरे और नट उसकी मूँछों पर यूँ एक पहिए वाली मोटर साइकिल चलाते और हाथ में छतरी लिए चहल–क़दमी करते जैसे वह सर्कस के तने हुए रस्से पर चल रहे हों. मजाल थी कि मछन्दर को ज़रा भी कुछ महसूस हो. आखिर को उसका नाम मछन्दर फ़ौलादी था और उसकी मूँछें खूब मोटी और बेहद मज़बूत थीं.

जो भी सर्कस देखने आता, कहता, "देखो मछन्दर कैसा सख्तजान और ताक़तवर है!" वह तालियाँ बजाते और उसको खराजे तहसीन पेश करते और मछन्दर फ़ख्र से फूल फूल जाता.

मछन्दर को सर्कस से बहुत प्यार था और तालियों की गूंज से बड़ी मोहब्बत. लेकिन सच्ची मोहब्बत बस उसको अपनी मूँछों ही से थी. वह अपनी मूँछों को बाक़ायदगी से कंघा करता, उन्हें सहलाता, उन पर तेल लगाता और मोम से पालिश करता था ताकि वह नर्म, मुलायम और चमकदार रहें.

जब वह बाहर निकलता तो मूँछों को रिबिन से नित नए तरीक़ो से बांधता और सजाता. कभी वह अपनी मूँछों में मोती पिरोता और कभी उन्हें खुला छोड़ देता. वह अपनी मूँछों को दिल व जान से देख भाल करता और उनको खुश रखने की हर मुम्किन कोशिश करता था. और वाक़ियतन उसकी मूँछें खुश नज़र आतीं क्यूँकि वह हमेशा एक तमानियत से ऊपर को चढ़ी रहती थीं.

इस तरह कई बरस बीत गए.

एक सुबह जब मछन्दर सो कर उठा तो उसने अपने दाईं मूँछ में एक सफ़ेद बाल देखा. अगले दिन उसकी बाईं मूँछ में भी एक सफ़ेद बाल नमूदार हो चुका था. फिर देखते ही देखते उसकी आधी मूँछें सफ़ेद हो गईं.

मछन्दर बूढ़ा हो रहा था और जल्द ही वह वक़्त आगया जब वह न अपनी मूँछों से वज़न उठा सकता था और न ही गाड़ी खींच पाता था. अब वह अपनी मूँछों के सहारे लटक भी नहीं सकता था और उनसे झूलने का तो खैर कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था.

सर्कस में मछन्दरे के करने को कोई काम न रहा था और वह घर बैठ गया.

मगर मछन्दर से सर्कस फ़रामोश न हो पाता था. उसको लोगों का तालियां बजाना और तमाम मजमा का खड़े हो कर दाद देना बहुत याद आता था.

एक दिन मछन्दर सर्कस के बाहर से गुज़रा तो उसने देखा कि उसके कर्तब की जगह और एक तमाशे का एलान बड़े बड़े हुरूफ़ में लिखा हुआ था:

हैरत–अंगेज़ जुड़वाँ तोप गोले

उसे सर्कस से तोप दाग़ने और फिर मजमा से तालियां बजाने की आवाज़ आई. मछन्दर की पुरानी यादें ताज़ा हो गईं और वह यह सोच कर उदास हो गया कि अब वह सर्कस में काम नहीं करता है. उसकी मूँछें भी ग़मज़दा लग रही थीं, उदास सी, दोनों सिरों से लटकी हुई.

“हाय मेरे सर्कस के दिन तमाम हुए. वाय मेरे सर्कस के दिन तमाम हुए.” यह कहता और आहें भरता, मछन्दर गलियों में घूमता रहा.

जैसे जैसे उसकी उदासी में इज़ाफ़ा हुआ, उसकी मूँछें नीचे ढलकती गईं. बिल–आखिर एक दिन उसकी मूँछें बिल्कुल सीधे नीचे लटक गईं. उस दिन मछन्दर हद से ज़्यादा ग़मग़ीन और अफ़्सुर्दा हो रहा था.

वह बिस्तर में लेटा हाय हाय कर रहा था और कहता जा रहा था, "मेरे सर्कस के दिन तमाम हुए. मेरे सर्कस के दिन तमाम हुए!" फिर उसने अपनी मूँछों पर हाथ फेरा और कहा, "अफ़्सोस, सद–अफ़्सोस, कि मेरी मूँछें भी मेरे कुछ काम न आसकीं!"

मछन्दर ने यह जुमला मुंह से निकाला ही था कि उसकी मूँछें अचानक हिलीं. वह तेज़ी से सरक कर उसके बिस्तर के नीचे पहुँचीं और मछन्दर के जूते निकाल कर उसके पैरों में पहनादिए. फिर मूँछें लपक कर कोने में गईं और मछन्दर की टोपी और छड़ी उठा लाईं. फिर उन्होंने दर्वाज़ा खोला और बाहर जाने का इशारा करने लगीं. इससे पेश्तर कि मछन्दर कुछ समझ पाता उसने अपने आपको तय्यार और बना संवरा सर्कस के गेट पर खड़ा पाया.

दूसरे दिन लोगों ने देखा कि सर्कस के बाहर एक नए खेल का इश्तेहार लगा हुआ था:

निराली मूँछें

सबको तजस्सुस हुआ कि इसमें कौन सा नया कर्तब दिखाया जाएगा. लोग जोक़–दर–जोक़ सर्कस देखने आ पहुँचे.

जब लोगों ने देखा कि मछन्दर खेल दिखाने लौट आया है तो उन्होंने तालियां बजा कर उसका इस्तिक़बाल किया. मछन्दर ने अपनी मूंछों ने अपनी छड़ी घुमाई और मूँछों ही से अपनी टोपी उतार कर सलाम किया. और फिर उसने बीस अदद गोले घुमाए...वह भी अपनी मूँछों से.

फिर सर्कस के घेरे में तीन शेर लाए गए. तमाशाई हैरान थे कि देखें अब क्या होता है. उनकी आँखों के सामने मछन्दर की एक मूँछ एक दायरे की शकल में गोल हो गई और दूसरी मूँछ एक कोड़े की तरह लहरा कर पटाख से कड़की.

शेर मूँछ के बने दायरे में से एक एक करके कूदने लगे.

"वाह! वाह! ज़बर्दस्त! मछन्दर की मूँछें कितनी निराली हैं!" लोग जोश में आकर चिल्लाने लगे, तालियां बजाने लगे, और दाद देने लगे.

मछन्दर यह सुनकर खुशी से फूला न समाया, क्योंकि उसे सर्कस से मोहब्बत भी थी और दाद–व–तहसीन हासिल करने का शौक़ भी, मगर सच्चा इश्क़ उसे अपनी मूँछों ही से था.

कहानी खत्म, पैसा हज़्म

मोलका देव साहब बेकरीवाले

मोलका देव ने दुनिया भर में घूम फिर के बेकिंग के राज़ सीखे थे. अनवा–अक़्साम की डबल रोटियां, बन, बिस्किट, और तरह तरह के मज़ेदार केक और लज़ीज़ पेस्टरियां बनाना अब उसके बाएं हाथ का खेल था. मोलका की हमेशा से ख्वाहिश थी कि उसकी अपनी बेकरी हो. एक रोज़ सफ़र करता वह एक छोटे से क़स्बे में जा पहुँचा जो समुन्दर के किनारे वाक़े था. यह एक ऐसा क़स्बा था जहां न तो बहुत शोर व ग़ुल था और न ही बिल्कुल सन्नाटा. आबादी न बहुत ज़्यादा थी और न बहुत कम. मोलका ने फ़ैसला किया कि बस अब वह इसी क़स्बे में अपनी बेकरी खोलेगा.

लेकिन मोलका देव को इल्म न था कि क़स्बे के लोग कितने लकीर के फ़क़ीर थे, और अपने तौर तरीक़ों से हट कर सोचना उनके लिए कितना मुश्किल काम था. उसको इस बात का अन्दाज़ा उस वक़्त हुआ वह दर्ज़ी के पास एक अपीरन और टोपी सिलवाने गया. दर्ज़ी ने न तो कभी इतना बड़ा अपीरन सिया था और न ही उसने कभी इतनी बड़ी टोपी बनाई थी. उसने मोलका के लिए यह काम करने से साफ़ इन्कार कर दिया.

बहुत मुश्किल से मोलका दर्ज़ी को इस बात पर आमादा कर पाया कि वह यह टोपी और अपीरन तय्यार करे.

बिल–आखिर दर्ज़ी ने सीढ़ी पर चढ़ कर मोलका के सर और कमर का नाप लिया और कहा कि अपीरन और टोपी तय्यार होने में एक माह लगेगा.

फिर मोलका लोहार के पास गया और एक बहुत बड़े साइज़ का ओवन बनाने के लिए कहा. लोहार ने कहा वह इतना बड़ा ओवन नहीं बना सकता और बेहतर होगा कि मोलका अपने लिए कोई आम साइज़ का ओवन पसन्द कर ले. मोलका को लोहार की भी बहुत मन्नत–समाजत करनी पड़ी तब जा कर वह मोलका की बात मानने को तय्यार हुआ. लोहार ने भी कहा कि उसे इतना बड़ा ओवन बनाने के लिए एक माह का अर्सा दरकार होगा.

मोलका ने वह एक माह इन्तेज़ार में गुज़ारा. सारा दिन वह समुन्दर के किनारे घूमता फिरता और कच्ची मछलियां, केकड़े, हश्त पा और कछुवे पकड़ पकड़ कर खाता. रात को वह रेत के टीलों के दर्मियान सो रहता. और यूँ एक माह गुज़ारने क बाद मोलका देव ने अपीरन और टोपी पहनी और ओवन को कन्धे पर उठा कर बेकरी पहूँचास. ओवन अन्दर रखने के लिए छत तोड़नी पड़ी. फिर बेकरी में आटे और शाकर की बड़ी बड़ी बोरियां पहुँचाई गईं. शाहद, बादाम, अखरोट, किशमिश और दिगर मेवे मर्तबानों में रखे गए. दूध, मलाई और क्रीम की बालटियां धरी गईं. इतने सामान के भर जाने के बाद मोलका के लिए बहुत कम जगह बची. अपने क़द काठ की वजह से उसको घुटनों के बल बेकरी के अन्दर दाखिल होना पड़ता और हाथों पैरों के बल काम करना पड़ता था. लेकिन मोलका यह तमाम मुश्किलात बर्दाश्त करने के लिए तय्यार था क्योंकि उसे नित–नई तर्कीबों से डबल रोटियां और केक बनाने का बेहद शौक़ था. वह चाहता था जल्द से जल्द उसकी बेकरी चल पड़े. वैसे भी, एक माह तक कच्ची मछलियां और कछवे खाने के बाद मोलका का दिल बहुत चाह रहा था कि वह अब एक गर्मागर्म, किशमिश वाला बन खाए.

आखिर ओवन जल गया और बेकरी से सोंधी सोंधी खुश्बू की लप्टें निकल कर फ़िज़ा में तैरने और घरों में पहुँचने लगीं. ओवन के अन्दर बन फूल कर खस्ता रंग हो रहे थे. मोलका ने आग को हवा दी और बाहर झांका. खरीदारों का एक छोटा सा हुजूम बेकरी के बाहर मंडला रहा था.

उन खरीदारों में मियाँ टालूबाल सबसे आगे थे. वह मीठे के बड़े रसिया थे. मिठाई, हलवे, केक, उन्हें हर मीठी चीज़ें खाने का बेहद शौक़ था. जब से उन्हें मालूम हुआ था कि एक बेकरी खुलने वाली है वह बेक़रार थे कि कब उन्हें बेकरी से कोई खस्ता, मीठी चीज़ खाने को मिलेगी. टालुबाल मियां की बेगम भी उनके साथ थीं. उन खातून को मीठा क़तई पसन्द न था और न ही उन्हें मोलका देव पर एतेबार था. वह तो यह देखने आई थीं कि यह आखिर किस क़िस्म की शरारत करता है.

मोलका ने ज्यूँ ही ओवन का दर्वाज़ा खोला, गर्म भाप का एक झोंका ठंडी फ़िज़ा में बादल की तरह छा गया, और सब कुछ नज़रों से ओझल हो गया. जब यह बादल छटा तो लोगों ने देखा कि मेज़ पर बनों के ढेर लगे थे, मगर उन्होंने यह भी देखा कि हर बन एक सोफ़ा–कुर्सी के साइज़ का था. किशमिश वाले बन, शहद लगे बन, तिल वाले बन, सोखता शकर बन, दारचीनी बन, हर तरह के बन वहां धरे थे और लोगों के सरों पर ऊंची इमारतों की तरह झुके आ रहे थे.

टालूबाल मियां ने अपनी उंगली काटी कि कहीं वह कोई ख्वाब तो नहीं देख रहे. मजमा से दबी दबी हैरत भरी सर्गोशियां उभरीं. मोलका ने मुस्कुरा कर हुजूम पर एक नज़र डाली और उनके रद्दे अमल का इन्तेज़ार करने लगा. लोगों ने अपने सर खुजाए और एक दूसरे की तरफ़ देखा. इतने बड़े बड़े बन भला कौन खा सकता है? उन्होंने आपस में खुसर–पुसर की.

सिर्फ़ टालूबाल मियां का दिल चाहा कि वह मोलका से कहें कि वह उन्हें एक टुकड़ा चखने के लिए दे दे, लेकिन उनकी बेगम ने उन्हें बहुत ज़ोर से घूर के देखा और उनकी कुछ कहने की हिम्मत न हुई.

लोग थोड़ी देर तक हैरत में डूबे, बनों के ऊँचे ढेरों को तकते रहे. फिर मजमा छटने लगा. लोग एक एक करके जाने लगे क्योंकि अब वहां करने को कुछ न था. ऐसा बन भला कौन खरीदना चाहता था जो महीना भर खाया जाए और खत्म न हो! मियां टालूबाल सबसे आखिर में टले. वह अफ़्सोस में सर को हिलाते हुए कहते जाते थे, "कैसा ज़ियां है! कैसा ज़ियां है!"

मोलका देव की कुछ समझ में न आया. लोग बेकरी आए भी और फिर कुछ खरीदा भी नहीं? उसने एक बन उठाया और चखा. बन बेहद लज़ीज़ था. "आखिर लोग बग़ैर कुछ खारीदे क्यों चले गए?" मोलका ने बन खाते हुए हैरानी से सोचा. फिर उसने एपरन की जेब में बन भरे और समुन्दर के किनारे जा निकला. वह बन खाता रहा, टहलता रहा और सोचता रहा. जब आखिरी बन उसके पेट में उतर गया तो उसे एक खयाल आया "शायद क़स्बे के लोगों को बन खाना पसन्द ही न हो! हो सकता है वह सिर्फ़ डबल

रोटी खाते हों? हाँ! यक़ीनन यही बात होगी. अब मैं हरगिज़ नहीं बनाउंगा. आज से मैं सिर्फ़ डबल रोटी बनाउंगा.”

अगली सुबह क़स्बे के लोग बेकरी से आती हुई खुश्बुओं की कशिश में खिंचते फिर वहां पहुँच गए. मोलका आज कुछ फ़रोख्त करने के लिए बेचैन था और उसने डबल रोटी की क़ीमत भी आधी रखने का फ़ैसला किया था. मियां टालूबाल इस दफ़ा भी सब से आगे थे. और हमेशा की तरह उनकी बेगम तेवरी चढ़ाए उनके पीछे खड़ी थीं.

जब मोलका ने ओवन का पट खोला तो भाप का एक बहुत ही बड़ा सा मरग़ोला निकला, और जब यह बादल छटा तो लोगों ने देखा कि उनके सामने ट्रक के साइज़ की हर क़िस्म की डबल रोटियां रखी हुई हैं. दूध वाली मीठी डबल रोटी, अखरोट की डबल रोटी, बग़ैर छने आने की डबल रोटी, राई की डबल रोटी, खशखाश की डबल रोटी, ग़रज़ वहां हर क़िस्म की डबल रोटी दस्तयाब थी. कई डबल रोटियां मेज़ के बिल्कुल किनारे धरी थीं और अगर उनमें से एक भी किसी के सर पर पड़ती तो वहीं उसका काम हो जाना था. लोग घबराहट में एक दूसरे के पाँव कुचलते हुए मेज़ से दूर हटने लगे. उन्होंने ग़ुस्से से मोलका को देख कर मुक–के भी लहराए. मोलका बेचारा हैरान खड़ा था. उसकी कुछ समझ में न आया कि लोग इतने ग़ुस्से में क्यों थे.

जल्द ही मजमा छट गया और सिर्फ़ मियां टालूबाल वहां अकेले खड़े रह गए. वह उन देवहैकल डबल रोटियों को हैरत और ललचाई हुई नज़रों से दिख रहे थे और सोच रहे थे कि आखिर यह मज़े में कैसी होंगी. लेकिन वह आखिर इतनी लहीम शहीम डबल रोटी भला क्यों कर उठा सकते थे. “अखरोट वाली डबल रोटी का एक सलाइस मक–खन के साथ कितना मज़ेदार लगेगा.” यह सोच कर ही उनके मुंह में पानी भर आया और आँखों में आँसू आ गए. उसी वक़्त उनकी बेगम उन्हें घसीट कर वहां से ले गईं.

मोलका अब झुंझलागया. उसकी बेकरी चलती हुई नज़र नहीं आरही थी. उसने डबल रोटी का एक टुकड़ा तोड़ कर मुंह में डाला. किस क़दर उम्दा और लज़ीज़ ज़ायक़ा था उसका! एक बेहतरी तौर पर बेक हुई डबल रोटी का ज़ायक़ा!

“इस क़स्बे के लोगों का भला क्या मसला है?” मोलका ने हैरत से सोचा और डबल रोटी का एक और लुक़मा निगला. फिर उसने डबल रोटियां एपरन की जेब में ठूंसीं और समुन्दर की तरफ़ निकल गया. वह डबल रोटी पे डबल रोटी खत्म करता जाता और सोचता जाता था. मगर तमाम डबल रोटियां चट कर जाने के बाद भी उसको अपने सवाल का जवाब न मिल पाया कि आखिर क़स्बे के लोगों के अजीब–व–ग़रीब रवय्ये की वजह क्या हो सकती है?

उस रात मोलका ने ख्वाब में केक और पेस्टरियां देखीं. वह एक बड़ी सी, नर्म सी, गुलाबी पेस्टरी को निगलने की कोशिश कर रहा था कि उसकी आँख खुल गई और उसने देखा कि वह अपने तकिए को पेस्टरी समझ कर निगलने की कोशिश कर रहा था! ख्वाब ने उसके ज़हन में एक नया बीज बोया और वह अपनी बेकरी की तरफ़ दौड़ा.

सुबह के वक़्त जब क़स्बे के लोग उठे तो फ़िज़ा में बिस्किटों की खुशबू फैली हुई थी. और फिर लोगों ने आसमान में एक अजीब–व–ग़रीब नज़्ज़ारा देखा: बोमेरींग की शकल का एक देव हैकल बिस्किट फ़िज़ा में चक–कर खा रहा था. फिर वह घरों की छतों और घंटा घर पर से उड़ता हुआ बेकरी की तरफ़ जाता हुआ नज़र आया. लोग तजस्सुस में उसकी सम्त भागे. मियां टालूबाल सबसे आगे थे और उनके हाथ गोया उस बिस्किट को पकड़ने के लिए फैले हुए थे.

जब बिस्किट बेकरी की तरफ़ उड़ता हुआ आया तो मोलका ने मुंह खोला और ग़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़प करके बिस्किट को समूचा निगल गया.

लेकिन जब मियां टालूबाल ने बेकरी के सामने रखी मेज़ पर नज़र डाली तो वह बिस्किट को भूल गए. वह अपना सर थाम कर जैसे सकते में आ गए. दूसरे भी भागते हुए वहां पहुँचे और मन्ज़र देख कर उनके क़दम वहीं के वहीं जमे रह गए. मेज़ पर बिस्किटों का एक पहाड़ रखा था और हर एक बिस्किट गाड़ी के पहिए बराबर था! एक पनीर से बना केक भी वहां धरा था जो साइज़ में पूरी बस के बराबर था! मोलका लोगों

को देख कर मुस्कुरा रहा था. उसको मालूम था कि बोमेरींग की शकल का इतना बड़ा बिस्किट आसमान की तरफ़ उछाल कर वह फिर लोगों को मुतवज्जह कर लेगा.

अचानक कोई चीख मार के रो पड़ा. यह मियां टालूबाल थे. इतनी सारी मज़ेदार खाने की चीज़ें देख कर जिन्हें सिर्फ़ उनके नामुनासिब साइज़ के बाइस खाना मुम्किन न था, उनके आँसू निकल पड़े थे. उनकी बेगम ने अपने मियां की आह–व–ज़ारी पर उन्हें एक डांट पिलाई.

उधर क़स्बे के लोगों को यूँ लगा गोया मोलका ने बोमेरींग बिस्किट का कर्तब दिखा कर उन्हें बेवक़ूफ़ बनाया हो. वह पागलों की तरह बिस्किट का पीछा करने पर शर्मा भी रहे थे और उनको महसूस हुआ जैसे बिस्किट के पीछे दौड़ कर उन्हों ने बहुत बचकाना हरकत की हो. जब उन्हों ने मोलका को मुस्कुराते देखा तो वह यह सोच कर ग़ुस्से में बफर गए कि इतने बड़े बड़े बिस्किट और केक बना कर शायद यह देव हमारे छोटे क़द का मज़ाक़ उड़ा रहा है.

“तेरी यह मजाल?” वह चिल्लाए.

जब मोलका ने लोगों को ग़ुस्से में चिल्लाते देखा तो उसकी मुस्कुराहट खत्म और उसका मुंह ग़ुस्से से लाल भभूका हो गया. और जब उसने लोगों वापस जाते हुए देखा तो उसे सख्त तैश आया और यह सोच कर कि उन लोगों को मेरी सलाहियत की कोई क़दर नहीं, एक बिस्किट उठा कर ज़ोर से फेंका. जब लोगों ने उस देव साइज़ बिस्किट को अपनी तरफ़ आते देखा तो वह उस से बचने के लिए घबरा कर भागे. अब तो मोलका ने तमाम बिस्किट एक एक कर के फेंकना शुरू किए: काजू लगे बिस्किट, ब्राउनीज़, क्रीम वाले बिस्किट, सोइस रोल, अदरक के मज़े वाले बिस्किट, आड़ो की जेली वाले टार्ट. उनमें से कुछ तो छतों पर गिरे और कुछ गलियों में इधर उधर बिखर गए. एक वनीला सैन्डविच गली में लुढ़कता हुआ चौराहे में नसब फ़व्वारे से जा टकराया. फिर मोलका ने पनीर का केक ज़ोर से फेंका जो उड़ता हुआ घंटा घर के घड़ियाल से जा चिपका. आखिर में मोलका ने अपनी टोपी उतार कर ज़मीन पे फेंकी, एपरन खींच कर फाड़ उतारा, और क़रीबी खम्बे को ग़ुस्से में एक ज़ोरदार लात जमाई.

तमाम गलियां खाली हो गईं. खौफ़ के मारे लोग घरों में जा घुसे और दर्वाज़े बन्द कर लिए. जब एक घन्टा गुज़र गया और क़स्बे में खामोशी तारी रही तो लोगों ने कुछ हिम्मत बांधी और घरों से निकले. एक एक कर के वह चौराहे की तरफ़ बढ़े मगर वहां मोलका देव का दूर दूर तक नाम–व–निशान न था.

"उस बदमाश देव को यह खौफ़नाक चीज़ें हम पर फेंकने की हिम्मत कैसे हुई?" बेगम टालूबाल चिल्लाईं.

उनके मियां उनके पीछे खड़े खामोशी से अपने आँसू पोंछते रहे.

"हां, हां...आखिर उसने यह जुर्रत कैसे की?" किसी और ने भी ग़स्से में सवाल उठाया.

"चलो, हम सब मिल कर उसको इस क़स्बे से भगा दें." कोई बोला.

"मगर वह है कहां?" किसी ने पूछा.

उस लम्हे क़स्बे में एक भिकमंगा दाखिल हुआ. उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे और उसको शदीद भूक लगी थी. भिकमंगे को उस वक़्त न मोलका देव में कोई दिलचस्पी महसूस हुई और न ही उसके बर्पा किए हुए हंगामे में. उसकी नज़रें तो खाने की तलाश में थीं. उसने फ़व्वारे के क़रीब ज़मीन पर पड़ा हुआ एक वनीला सैन्डविच का टुकड़ा उठा कर सूंघा. टुकड़े से बड़ी उम्दा खुश्बू आ रही थी. भिकमंगे ने आनन–फ़ानन उसे चट कर डाला और मज़ीद की तलाश में फिर इधर उधर देखने लगा. उसकी भूक खत्म नहीं हुई थी. इतने में उसकी नज़र मियां टालूबाल पर पड़ी जो भिकमंगे की हरकतों को बड़े ग़ौर से देख रहे थे. मियां टालूबाल अपने बेगम की नज़र बचा कर खिसक लिए थे. अब वह उस भिकमंगे के साथ मिल कर बिस्किट के टुकड़े तलाश करने में लग गए.

बिस्किट का एक टुकड़ा पाते ही टालूबाल मियां ने झट मूंह खोल कर उसे मुंह में डाल लिया. फ़ौरन ही उनको एक अनजान लज़्ज़त का एहसास हुआ और वह ज़ायक़ादार, मीठी चीज़ एक दम उनके मुंह में घुल गई. वाह वाह! क्या मज़ेदार बिस्किट था. मियां टालूबाल वालेहाना अन्दाज़ में चारों तरफ़ देखने लगे. उन्हें खदशा महसूस हुआ कि अब

शायद बिस्किट का कोई और टुकड़ा उनको न मिल पाए. लेकिन उनका यह डर बेबुनियाद था. वहां बिस्किट के बहुत सारे टुकड़े पड़े थे. वह घुटनों के बल बैठे बिस्किट के टुकड़े उठा उठा कर खाने लगे और जोश में आकर उन्हों ने ज़मीन पर लथड़ी हुई वनीला क्रीम भी चाट डाली.

"हाईं! यह क्या कर रहे हो तुम!" उनकी बेगम ने चिल्ला कर कहा. उन्हों ने अपने शौहर को घुटनों के बल ज़मीन पर चलते हुए देख लिया था. उनको ज़मीन से टुकड़े उठा कर खाता देख कर वह ग़ुस्से से पागल हो गईं. अपनी बेगम की आवाज़ सुन कर मियां टालूबाल और भी तेज़ी से मुंह चलाने लगे. उन्हें यक़ीन था कि अब बेगम उन्हें ज़बर्दस्ती पकड़ कर घर ले जाएंगी. मगर उनकी बेगम के चिल्लाने पर और लोग भी मियां टालूबाल की तरफ़ देखने लगे. जब उन्हों ने देखा कि यह ज़मीन पर रेंग रहे हैं और मुंह चलाते जाते हैं तो उन्हें लगा कि मियां टालूबाल को कोई बहुत ही लाजवाब चीज़ मिल गई है. फिर तो तमाम लोग उन टुकड़ों पर पिल पड़े और मोलका देव को भूल–भाल कर लोग गलियों में गिरे बिस्किटों के टुकड़े उठाने में जुट गए. कुछ लोग सीढ़ियों की तलाश में भागे. जब मोलका ग़ुस्से में आ कर यह चीज़ें फेंक रहा था उन्हों ने बहुत सारे बिस्किटों को छतों पर गिरते देखे थे. मियां टालूबाल इस भगदड़ का फ़ायदा उठा कर अपनी बेगम से बचते एक सीढ़ी लिए सीधे घन्टा घर की तरफ़ दौड़े. अभी तक और लोगों को वहां चिपके हुए पनीर के बने केक का खयाल नहीं आया था.

उस रात क़स्बे के लोग छतों पर बिस्किटों और नान खताइयों के टुकड़े उठा उठा कर बोरों में भरते और झाड़ुओं से उनका बुरादा जमा करते रहे. कुछ लोग बेकरी के अन्दर घुस गए कि कहीं ग़लती से कोई बिस्किट अन्दर न पड़ा रह गया हो. बेकरी में कुछ न था सेवाय खाली थालों के जिन में मैदे की कुछ खुर्चन लगी हुई थी. यह लोग उसी को चाट गए.

जब घन्टा घर ने रात के बारा बजाए तो कोई पचीस लोग च्यूँटियों की तरह घन्टा घर के घडिय़ाल से चिपके हुए थे. मियां टालूबाल सब से ऊपर थे. वह अब एक नाक़ाबिले यक़ीन हद तक खा चुके थे और सीढ़ी पे लटके नींद में झूम रहे थे. बेगम की डांट

फट्कार पर भी वह नीचे न उतरे थे जिस पर उनकी बेगम शर्म के मारे घर के अन्दर जा छुपी थीं.

उस दौरान लोग एक बार फिर चौराहे पे जमा हो चुके थे.

“आखिर हम ने मोलका से यह क्यूँ न कहा कि वह डबल रोटी और बन टुकड़ों में काट काट कर बेचे?” एक औरत बोली.

“उन्हें चाय में डुबो कर खाने में क्या लुत्फ़ आता!” एक बड़े मियां ज़बान चाटते हुए बड़बड़ाए.

“अब तो हमने मोलका को इतना ग़ुस्सा दिला दिया है कि वह कभी वापस न आएगा.” एक बच्चा अफ़्सोस से बोला.

मोलका अफ़्सुर्दा और निढाल हो कर सो गया था. उसने फिर से कच्चे आकटोपस और केकड़े खाए थे. मेज़ पर लात मारने की वजह से उसके पैर में भी दर्द हो रहा था. उसने बिल–आखिर उस क़स्बे को हमेशा के लिए खैरबाद कहने का फ़ैसला कर लिया था.

मोलका ने ख्वाब में देखा कि क़स्बे को लोग डन्डे और लाठियां ले कर उसके पीछे दौड़ रहे हैं. डर से उसकी आँख खुल गई और उसने अपने आपको लोगों में घिरे पाया.

लेकिन मोलका ने देखा कि लोगों के हाथों में डन्डे और लाठियां न थीं. वह तो मोलका की टोपी उठाए हुए थे जो अब धुली–धुलाई, साफ़ सुथरी और कलफ़दार नज़र आ रही थी, और उस पर कुछ कढ़ा हुआ भी था. मोलका ने देखा उस पर लिखा था:

लाजवाब देव साहब बेकरी वाले

मोलका देव ने खुश खुश वह टोपी सर पर पहन ली.

वह एक मुअज़्ज़ज़ शख्स की तरह क़स्बे की तरफ़ लौट आया और फिर इस सोच में लग गया कि अब बेकरी में क्या चीज़ बनाए.

च्यूँटियों के जूते

एक ज़माने में च्यूँटियों के घरों की अल्मारियां जूतों से भरी हुआ करती थीं. चूँकि च्यूँटियों के छे पाँव होते हैं, हर च्यूँटी को एक वक़्त में जूतों के कम–अज़–कम तीन जोड़े चाहिए होते थे. तीन जोड़े काम के लिए, तीन खेल कूद के वासते, तीन दावतों में आनेजाने के लिए, और तीन जोड़ी चप्पल घर में पहनने के लिए. यानी पन्द्रह जोड़ी जूते. या यूँ कहिए कि तीस अदद जूते. और यह सिर्फ़ एक च्यूँटी के लिए!

सिवाय सिपाही च्यूँटियों के, च्यूँटियां एक जैसे तीन जोड़े जूते नहीं पहनती थीं. वह मिला–जुला कर मुखतलिफ़ जोड़े पहना करतीं, और उनमें जो फ़ैशनेबल बीबियां थीं वह अपने कपड़ों से मैचिंग करते रंग–बिरंगे जूते पसन्द करती थीं. च्यूँटियों के घरों के बाहर जूतों के ढेर लगे रहते थे. दावतों में जाते वक़्त च्यूँटियां तीन जोड़े पहन कर और तीन नफ़ीस जोड़ों के जूते लेकर पहुँचतीं ताकि घर के अन्दर जाते वक़्त नाज़ुक सैन्डल पहन सकें. अक्सर उस ढेर में च्यूँटियों के जूते खोजाते. दावतों के बाद अपने अपने जूते ढूंढने की मुहिम शुरू होती जिनकी वजह से बेशुमार झगड़े होते. सैन्डलों और चप्पलों के ढेर में जूतियां गुड–मुड हो जातीं. च्यूँटियां ग़लती से एक दूसरे के सैन्डल पहन लेतीं. कुछ बेइमान च्यूँटियों की यह आदत थी कि वह अपने घर से पुराने धुराने जूते पहन कर आतीं और ढेर में से अपने जूतों के डिज़ाइन के नए जूते पहन कर भाग जातीं. इस वजह से अगर ग़लती से भी कोई च्यूँटी किसी और के जूते पहनती पकड़ी जाती तो फिर ज़बर्दस्त झगड़ा होता. उन लड़ाइयों में जूते भी खूब चलते और कभी कभी तो जूतों की वह बर्सात होती कि क्या कहने. इस साते हंगामे के बाद च्यूँटियों के लिए अपने अपने जूते तलाश करना और भी मुश्किल हो जाता.

च्यूँटियां बेहद मसरूफ़ ज़िन्दगी गुज़ारतीं. उनका आधा दिन काम काज में दौड़ते गुज़रता. और आधा दिन वह अपने पसन्दीदा रक़्स, टिक–टो–हिप–कलाग–टाक–हाप में मस्त रहतीं. इस रक़्स के सिर्फ़ एक चक–कर को मुकम्मल करने के लिए हर जोड़े को पूरे तीन हज़ार छे सौ क़दम उठाने होते थे. और ऐसा कभी नहीं होता था कि कोई

जोड़ा ग़लती किए बग़ैर आधा चक–कर भी मुकम्मल कर पाए! लिकिन च्यूँटियों को तो हर काम कई कई मर्तबा करने में बड़ा लुत्फ़ आता है लिहाज़ा जब वह रक़्स के दौरान ग़लती करतीं या क़दमों की गिन्ती भूल जातीं तो मज़े में फिर नए सिरे से चक–कर शुरू कर देतीं.

च्यूँटियों की इतनी मसरूफ़ ज़िन्दगी की वजह से उनके जूते बहुत जल्दी घिस और टूट जाते थे. लेकिन उन सब में सिर्फ़ एक च्यूँटा था जो मोची का काम करता था. चूँकि उसे तन्हा सारे काम करने होते और दिन–रात उसकी ज़रूरत पड़ती, उसकी दुकान हर वक़्त खुली रहती थी. कुछ दिन वह जूतों की मरम्मत करता, कुछ दिन नए जूते का डिज़ाइन तराशता. कभी वह चमड़ा काट काट कर रख रहा होता और कभी जूते सी रहा होता. यह सारे काम ज़ाहिर बात है कि वह अपने मुंह से करता था! उसका मूंह हर वक़्त काम से भरा रहता. अपनी दिन–रात की मेहनत और मशक़्–क़त की वजह से वह बहुत अमीर हो गया था.

एक दिन जूता सीते हुए ग़लती से उसने अपना पैर काट लिया. ऐसी हरकत इससे पहले कभी न सर्ज़द हुई थी.

“ग़लिबन मैं कुछ ज़्यादा ही मेहनत कर रहा हूं!” उसने सोचा, और फ़ैसला किया कि वह एक दिन आराम करेगा.

अगले रोज़ सुबह गाहकों ने मोची की दुकान को बन्द पाया. “इसका क्या मतलब हुआ भला?” सब ने एक दूसरे से पूछा लेकिन किसी के पास इसका जवाब न था क्योंकि इससे पहले आज तक दुकान बन्द न हुई थी. “हम इस बात का मतलब मोची से पूछेंगे, जब वह वापस आएगा!” यह कह कर सब च्यूँटियां दौड़ती हुई अपने अपने कामों पर चली गईं क्योंकि उन्हें देर हो रही थी.

उधर एक दिन के आराम से मोची च्यूँटे को बड़ा लुत्फ़ आया. उसकी तो गोया आँखें खुल गईं. “मैं भला इतनी मशक़्–क़त क्यूँ करता था?” उसने खुद से सवाल किया. उसने अपना बैंक अकाउन्ट देखा तो पता चला कि उसके पास इतने पैसे जमा हो चुके

थे कि अब वह आराम से बैठ कर खा सकता था. उसने फ़ैसला किया कि अब वह अपनी बक़िया ज़िन्दगी सैर–व–सफ़र में गुज़ारेगा. यह तय करके उसने अपने सारे पैसे एक गठरी में बांधे और बग़ैर किसी को बताए निकल लिया.

जब च्यूँटियों ने दुकान को दूसरे दिन भी बन्द पाया तो वह मोची च्यूँटे की तलाश में निकल खड़ी हुईं, मगर मोची का कुछ पता न चला. एक एक कर के दिन गुज़रते गए और न ही मोची कहीं नज़र आया और न ही उसकी दुकान खुली. टूटे हुए तस्मों, घिसे हुए तल्लों, और टूटी हुई एड़ियों वाले जूतों के ढेर अब खतरनाक हद तक ऊँचे होने लगे थे.

“देखो ज़रा, कितनी ग़ैर–ज़िम्मेदाराना हरकत की है उस मोची ने!” फ़ैशनेबल बीबियां बोलीं. एक हफ़्ता गुज़र चुका था और मोची की ग़ैर–मौजूदगी उन्हें परेशान किए दे रही थी. अब न कोई उनके लिए नए जूते बनाने वाला था और न ही च्यूँटियां यह चाह रही थीं कि पुराने जूते पहने देखी जाएं.

चन्द दिन और गुज़र गए और मुसलसल चलने और रक़्स करने से च्यूँटियों के तमाम जूतों की एड़ियां बिल्कुल घिस गईं. अब फ़ैशनेबल बीबियों ने मजबूरन यह एलान किया कि बग़ैर एड़ी वाले जूते पहनना भी जायज़ है और यह कि एक मर्तबा पहने हुए जूते दुबारा पहनने में भी कोई खास बुराई नहीं है. उन्होंने एक दूसरे को दिलासा दिया और कुछ दिनों के लिए सब यह मसला भूल–भाल गए.

मगर च्यूँटियां उसी तरह चलती फिरती और रक़्स करती रहीं और वह दिन भी आगया कि उनके जूतों के तल्ले भी घिस गए. जब वह चलतीं तो उनके खस्ताहाल जूते उनके पैरों में घिसट रहे होते. अब दुबारा मोची की तलाश शुरू हुई मगर एक बार फिर उनको नाकामी का सामना करना पड़ा. उनके पास अब इस मसले का कोई हल न था. फ़ैशनेबल बीबियां पाँव घसीटती पार्टियों में पहुँचतीं. वह हर क़दम पर लड़खड़ातीं, और ऊँची नीची, टूटी फूटी एड़ियों और टूटे हुए तस्मों और लम्बे लम्बे पैराहनों से उलझतीं जो वह अपने फटे पुराने जूते

छुपाने के लिए अब पहनने लगी थीं. इन हालात में बग़ैर गिरे रक़्स करना भी नामुम्किन हो चला था.

एक शाम एक पार्टी में वह बैठी अपनी बद–क़िस्मती पर आँसू बहा रही थी कि दर्वाज़ा खुला और एक सुर्ख च्यूँटी अन्दर दाखिल हुई. वह नंगे पाँव थी. उसने एक भी जूता न पहन रखा था.

“आय हाय, ज़रा देखो तो इस बेशर्म को!” एक फ़ैशनेबल च्यूँटी चिल्लाई.

दूसरे मेहमान भी सुर्ख च्यूँटी को नंगे पैर फ़र्श पर चलते देख कर हैरानी से मुंह खोले तक रहे थे.

लेकिन नंगे पैरों वाली सुर्ख च्यूँटी ने इस खुबसूरती और महारत से टिक–टो–हिप–कलाग–टाक–हाप नाचा कि सब सकते में आगए. क्या नज़ाकत थी और क्या वक़ार! उसने पूरा चक्र–क़र भी तक़रीबन मुकम्मल कर ही लिया था, बग़ैर एक क़दम भूले. अब उसकी देखा–देखी बाक़ी च्यूँटियों ने भी, फ़ैशनेबल बीबियों के रोकने के बावजूद, एक एक करके अपने पुराने सैन्डल और जूते उतार कर फेंकने शुरू किए और रक़्स करने लगीं. जूते उतारते ही उन्होंने खुद को हल्का–फुल्का और आज़ाद महसूस किया. उनके पाँव थिरक रहे थे. अब उन्हें मालूम हुआ कि नंगे पैर वह कितनी खूबसूरती और महारत से रक़्स कर सकती हैं.

फ़ैशनेबल बीबियों ने फ़ैसला किया था कि वह कभी इस वाक़ए का ज़िक्र न करेंगी जो उस रात पार्टी में पेश आया था. लेकिन बात तो अब फैल चुकी थी क्योंकि उस रात की पार्टी बहुत कामयाब रही थी. पार्टी का इख़्तेताम भी बेहद सुकून से हुआ था. न कोई अफ़्रा–तफ़्री न कोई झग़ड़ा. न दर्वाज़े पर जूतों के पहाड़ और न कोई आपा–धापी. सब नंगे पैर आराम से निकल लिए थे.

उस दिन के बाद सुर्ख च्यूँटी को बेशुमार दावतों में मदऊ किया गया. वह जहां भी जाती एलान करती कि नंगे पैर चलना सेहत के लिए कितना मुफ़ीद है, और फ़ैशन के ऐन मुताबिक़ भी है और अक़लमन्दाना बात भी. देखते ही देखते सुर्ख

च्यूँटी सब से ज़्यादा माडर्न और सब से ज़्यादा फ़ैशनेबल क़रार पाई. फिर कई और च्यूँटियों ने भी नंगे पैर बाहर निकलना शुरू किया.

जूतों की दिलदादा फ़ैशनेबल बीबियों ने भी आखिर कार अपने फटे हुए सैन्डलों को खैर–बाद कहा, इस डर से कि कहीं उनके साथी उनको "ओल्ड–फ़ैशन्ड" न क़रार दे दें.

बस वह दिन और आज का दिन, तमाम च्यूँटियां नंगे पाँव चलती हैं.